(2)

R.M.M. Law College, Saharsa
Nareshji Anand
LL.B. Part – IInd
Paper – VIth
Environmental Law

भारत की राष्ट्रीय पर्यावरण नीति तथा संवैधानिक एवं सांविधिक आधार

(i) पर्यावरणीय नीति :–

पर्यावरण के वैश्विक आयाम एवं पोषणीय विकास का बीजमंत्र है – विश्वव्यापी सोच और राज्य स्तर पर कार्य (Think globally, act nationally)। पर्यावरण मूलतः राष्ट्रीय समस्या है जो अतिरेक होने पर विश्व व्यापी रूप ग्रहण कर लेता है। इसलिए पर्यावरणीय समस्याओं वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, मानव प्रदूषण आदि से राष्ट्र स्तर पर बचाव के प्रभावी प्रयास किये जा सकते हैं।

(क) पूर्व-स्वातंत्र्य काल की पर्यावरणीय नीति :–

(i) प्राचीन भारत :– भारत में अति प्राचीन समय से इस सत्य को स्वीकार किया गया है कि पर्यावरण जीवन का आधार है – स्वस्थ एवं स्वच्छ पर्यावरण में ही जीवन की गुणवत्ता संभव है। प्राचीन समय में आबादी की कमी के कारण पर्यावरण प्रदूषण एवं असंतुलन की इतनी बड़ी

Scanned with CamScanner

समस्या नहीं थी जितनी कि अब हो गयी है। फिर पर्यावरण के प्रति जागरूकता थी। उस समय वृक्षों की महत्ता को स्वीकार किया गया था। हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रकृति प्रेम एवं सभी जीवों के पर्यावरणीय संरक्षण में अंतर्सम्बन्धों के प्रति सजगता प्रदर्शित की गयी थी जो ऋषियों द्वारा धार्मिक कर्त्तव्यों के रूप में निर्दिष्ट की गयी और पश्चात्वर्ती शासकों द्वारा लागू की गयी। ऐसा प्रतीत होता है कि 2000 से 5000 ई० पूर्व अवधि में मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चान्हुदड़ो और द्रविण सभ्यताएँ पारिस्थितिकीय तंत्र में सामंजस्य रखते हुए कायम रहीं।

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल (ई०पू० 300) के पूर्व पर्यावरण संरक्षण के सजग प्रयास नहीं हुए। बल्कि छोटे-छोटे राजाओं के राज्य में वनों का दोहन संसाधनों को जुटाने हेतु हुआ। परस्पर युद्ध में पराजित राजा वनों में शरण लेते थे और वृक्षों को काटकर बस जाते थे। प्रवासी खेतिहरों से वनों का बहुत नुकसान होता था। भारतीय इतिहास में सजग रूप से पर्यावरण संरक्षण का स्वर्णिम युग गुप्त काल रहा। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (3श - 300ई०पू०) में पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रावधानों का वर्णन मिलता है। चाणक्य के कुशल प्रधान मंत्रित्व काल में वनों की देख रेख हेतु अधीक्षक नियुक्त किये गये और कार्यों के आधार पर वर्गीकरण किये गये। पेड़ों के काटने, वनों को क्षति पहुँचाने पशुओं, मछलियों तथा हिरणों के शिकार करने के विरुद्ध कई तरह के दण्ड विहित किये गये थे। अशोक ने इस नीति का अनुसरण किया।

Scanned with CamScanner

(ii) मध्यकालीन भारत में पर्यावरणीय नीति:-

मध्यकालीन भारत में पर्यावरण संरक्षण पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। मुगल बादशाह कुछ राजकीय वृक्षों का संरक्षण देने तथा महलों के आस-पास उद्यानों के विकास तक सीमित रहे। सामान्य लोगों द्वारा अनियंत्रित रूप से वन कटान होता रहा।

(iii) ब्रिटिशकालीन भारत में पर्यावरणीय नीति:-

ब्रिटिश शासन काल के प्राथमिक शासन काल में वनों के संरक्षण के प्रति तटस्थ नीति रही। राजकीय नौकायन, निर्यात व्यापार हेतु टीक और चन्दन की कटाई और कृषि कार्य हेतु वनों की कटाई होती रही। सन् 1806 में मालवार में टीक की संभावना हेतु आयोग बना और वन संरक्षक नियुक्त हुआ जो संरक्षण के बजाय लूटना प्रारम्भ कर दिया। परिणामतः 1823 में संरक्षक का पद समाप्त कर दिया गया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सुनियोजित ढंग से कार्यवाहियाँ प्रारंभ की गई। सन 1864 में प्रथम वनों का महानिदेशक नियुक्त हुआ। सन 1865 में वन अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा वनों पर राज्य का अधिकार स्थापित किया गया। सन 1894 में वन नीति के अंतर्गत सारे वनों को सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया इसमें दो प्रमुख घोषणाएँ हुई :- (1) वन संरक्षण पर स्थायी खेती को वरीयता दी गई और (2) वनों के प्रशासन का अनन्य उद्देश्य लोकभौतिक

लाभ प्रदान करना था। वन नीति का तीन उद्देश्य थे- (अ) देश में लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं सामान्य सफाई को बढ़ाना (ब) देश की जलवायु एवं भौतिक दशाओं का संरक्षण और (स) लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति। वनों को चार वर्गों में विभक्त किया गया;- (1) ऐसे वन जिनका जलवायु एवं भौतिक आधारों पर संरक्षण आवश्यक था। (2) ऐसे वन जो वाणिज्यिक दृष्टि से मूल्यवान लकड़ी के आपूर्ति करते थे, (3) नगण्य वन जो कम महत्वपूर्ण लकड़ी उत्पन्न करते थे, (4) नाममात्र के वन जो चारागाह के कार्य आते थे। सन् 1927 में वन अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा मात्र अधिवास के आधार पर लोगों के वन उत्पाद के अधिकार को समाप्त कर दिया गया और राज्य को ग्रामवन सहित सभी वनों को अर्जित करने की शक्ति दी गयी।

वन अधिनियम के माध्यम से वन संसाधनों के संबन्ध के अतिरिक्त विविध काल में प्रदूषण नियंत्रण हेतु कदम उठाये गये। ये नियम जल प्रदूषण, वन्य जीवन एवं भूमि के प्रयोग से सम्बन्धित थे।